गाथा (GAATHA)
स्त्री अस्मिता और विमर्श की सहकर्मी-समीक्षित, अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

ISSN : 3049-3463(Online)
Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025
Page No.- 06-09
©2025 Gaatha
https://gaatha.net.in
Author :

डॉ. कुमारी आभा
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, एस0 पी0 जैन कालेज, सासाराम.

Corresponding Author :

डॉ. कुमारी आभा
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, एस0 पी0 जैन कालेज, सासाराम.

नारी तेरी अकथ कहानी

नारी को लेकर प्राचीन काल से आज तक न जाने कितने साहित्य लिखे गए। उसे अंदर और बाहर से समझने की बहुत कोशिश की गयी। फिर भी आज तक उसे पूर्णतः साझा नहीं किया जा सका है। धर्म-ग्रंथों में उसे देवी कहकर महिमा मंडित किया गया। रीति-काल में उसे कला और श्रृंगार के रूप में चित्रित कर उसके बाहरी सौन्दर्य तक सीमित रखा गया। आधुनिक काल में किसी ने 'अबला जीवन' कहकर कर उसपर दया दिखाने की कोशिश की तो किसी ने 'माँ, सहचरी, प्राण' कहकर पुरुष के साथ तादात्म्य स्थापित करने में अपनी कलम तोड़ दी। नारी के अंदर बचपन से प्रौढ़ावस्था तक उठ रहे भावनाओं के ज्वार को पूर्णता के साथ किसी ने भी उकेरने की कोशिश नहीं की। इसका मुख्य कारण पुरुषों की अपनी दृष्टि रहीं जिसे नारी पर आरोपित करने की कोशिश की गयी। जब से स्त्रियों ने कलम उठाई है तबसे उसके आतंरिक पहलु को अभिव्यक्ति मिलने लगी है।

नारी सिर्फ हाड़-मांस की पुतली नहीं है। उसके अंदर भी भावनाएं हिलोरें लेती हैं| घर में बच्ची के जन्म लेने पर परिवार जनों में जो उदासी देखी जाती है, उसे लेकर नारी के अंदर जो हाहाकार उमड़ता है उसे कौन देख पाता है ? बढ़ती उम्र के साथ परिवार द्वारा भाई-बहन में भेद होते देखकर बालिकाओं के कोमल मन में जो उपेक्षा का भाव उमड़ता है उसे व्यक्त कर पाना संभव नहीं। क्या गुजरती है उसपर जब वह किशोरावस्था में पहुंचती है और वह उन्मुक्त उड़ान भरने की कोशिश करती है तो घर से बाहर तक हाय तौबा मच जाता है। घर से बाहर निकलने पर बच्चे-बूढ़े-नौजवान की घूरती आँखे उसे भीतर तक कंपकंपा देती है। वह असहज हो उठती है। परिवार को लगता है अब इसे किसी खूंटे से बाँध कर मुक्त हो जाना चाहिए। इन सब बातों का उसके किशोर मन को किस कदर

व्यथित करता है इसकी कोई सीमा नहीं। हद तो तब होती है जब उसके बाहरी सौन्दर्य के आधार पर मूल्यांकन शुरु होने लगता है। लंबा कद काठी, दूधिया रंग, चेहरे की बनावट की मीमांसा देख कर उसपर क्या गुजरती है वही जान सकती है। जैसे वह प्लास्टिक की निर्जीव गुड़िया हो। उसके अंदर कोई भाव नहीं, कोई विचार नहीं। उसके बाद माता-पिता की हैसियत का मूल्यांकन होता है कि वह कितना तिलक दहेज़ पर खर्च कर सकता है। सबकुछ तय हो जाने पर वह एक खूंटे से दूसरे खूंटे पर गाय की तरह बाँध दी जाती है। न चाहते हुए भी वह स्वीकार करने को बाध्य हो जाती ही। यदि किसी ने मन की गाँठ खोलने की कोशिश की तो उसे परिवार की प्रतिष्ठा का हवाला देकर चुप करा दिया जाता है।

उसकी कहानी यहीं तक नहीं रुकती। सास की मेहना, पति की प्रताड़ना घरेलू हिंसा को जन्म देती है। लाचार हो वह या तो आत्म ह्त्या कर लेती है या न्याय के लिए न्यायालय का दरवाजा खटखटाती है। वहाँ भी न्याय मिलेगा इसकी कोई गारंटी नहीं। वर्षों यह खेल चलता रहता है। तबतक वह माता-पिता अथवा भाई-बहन पर बोझ की तरह रहती है जैसे वह इस घर की बेटी नहीं। यदि गोद में कोई बालक हो तो यह बोझ और भी असह्य हो उठाता है। तलाक होने की स्थिति में उसका जीवन और भी भयावह हो जाता है क्योंकि उसका दामन थामने वाला कोई भलमानुष बिरले ही मिलता है जो मान-सम्मान के साथ उसका सहयोगी बन सके।

शिक्षा के विकास के साथ नारी शिक्षा पर भी विशेष जोर दिया गया। हाई स्कूल तक तो वह घर से खा-पीकर पढ़ाई-लिखाई कर लेती है, किन्तु उच्च शिक्षा के लिए घर से बाहर जाना पड़ता है, जहां हर पल वह किसी अज्ञात आशंका से आतंकित रहती है कि कहीं किसी प्रकार की अनहोनी न हो जाय। जब वह अखबारों में सामूहिक बलात्कार और ह्त्या की खबरें पढ़ती है तो सिहर उठती हैं। कहीं मेरे साथ ऎसी अनहोनी न हो जाय। कई बार तो यह भी देखने को मिलता है कि वह ट्यूशन देने वाले शिक्षक का शिकार बन जाती है। मॉडर्न बनने के चक्कर में कई लड़कियाँ ब्लैक मेलिंग का भी शिकार हो जाती हैं। उसका खामियाजा बहुत बार अभिभावक को भी उठाना पड़ता है। बदनामी के डर से या तो आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है या बेटी की पढ़ाई ही छुड़वा दी जाती है। हर बार चोट नारी को ही मिलती है चाहे प्रताड़ना करने वाला पुरुष ही क्यों न हो ?

माता-पिता के घर से जब वह ससुराल जाती है तो सबकुछ अनजाना सा होता है। घर, मकान, सास, ननद, पति एवं उनके नाते-रिश्तेदार सब कुछ पराए होते हैं। एक अनजाने जगह में सबसे तारतम्य बिठाना कितना कठिन होता है यह एक नारी ही बता सकती है। सबसे बड़ी बात यह कि वह वहां के रीति-रिवाजों से भी अनभिज्ञ होती है। जीवन की पहली सीढ़ी कितनी कठिन परीक्षा से गुजरती है इसका अनुमान लगाना सहज नहीं है। फिर शुरु होती है है जीवन की अनवरत कठिन साधना। परिवार के सभी सदस्यों की अभिरुचि का ध्यान रखते हुए हर कदम उठाना। चाहे भोजन बनाना हो या खिलाना-पिलाना। सबसे अंत में जो कुछ बचता है उसी को खाकर संतुष्ट हो जाना। समस्या तब शुरु होती है जब आवश्यकता से अधिक खाना बच जाता है। धौंस मिलने लगती है कि कमाकर लाना नहीं है इसलिए बर्बादी का कोई गम नहीं।

जो महिलाएं कामकाजी होती है, उन्हें दोहरी जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। ऑफिस में कर्मचारी की तरह खटना और घर आकर गृहिणी की भूमिका निभाना। यदि सौभाग्य से पति-पत्नी दोनों कामकाजी है तो जिम्मेवारी और भी ज्यादा। सुबह उठाकर रसोइया की तरह बच्चों का टिफिन तैयार करना, फिर पति को खिला-पिलाकर ऑफिस के लिए तैयार करना। इसके उपरांत झटपट स्वयं भी तैयार होकर ऑफिस जाना। चौबीसों घड़ी मशीन की तरह नाचते रहना। बावजूद इसके पति और बच्चों के नखरे अलग। कितना सबकुछ सहती है नारी। फिर भी वह समाज में दोयम

दर्जे की नागरिक बनकर रह जाती है। कहीं भी भूल चुक हुई कि उसपर हजार तोहमतें जड़ दी जाती है बिना समझे-बुझे कि गलती किसकी है। उसकी स्थिति सेब और चाकू की है चाहे सेब पर चाकू गिरे या चाकू पर सेब हर हालत में घायल सेब ही होता है। गलती किसी की भी हो दोषी नारी ही समझी जाती है।

हिंदी कथा साहित्य में इन दिनों काफी कुछ लिखा जा रहा है। जबसे 'स्त्री विमर्श' का आन्दोलन जोर पकड़ा और स्त्री लेखन का विकास हुआ तबसे नारी मन की व्यथा खुल कर सामने आने लगी। स्त्री रचनाकारों ने न केवल नारी समस्याओं को सामने रखा बल्कि उसके समाधान की दिशा में तनकर खड़ी हो गयी। वह हर अन्याय का जमकर विरोध करने लगी है। चाहे पुरुष सत्ता की बात हो या यौन उत्पीड़न की। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हो चली है। चाहे घर के अंदर हो या बाहर हर अन्याय के प्रति उनके अंदर विद्रोह का स्वर प्रबल हो उठा है। उनकी रचनाओं में उसकी झलक साफ़ दिखाई पड़ती है।

महादेवी वर्मा ने नारी जाति के अपमान पर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहती हैं कि आदिकाल से नारियों पर जुल्म और अत्याचार होता रहा किन्तु किसी औरत ने उसका विरोध
नहीं किया। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाने वाले राम पर भी अंगुली उठाई जो अग्नि परीक्षित सीता को बिना दोष साबित किए घर से निकाल दिए। वह राम कथा को लिखने वाले तुलसी पर भी प्रहार करने से नहीं चुकी। भारत की नारियों को संबोधित करती हुई करती हैं ------

"मैं हैरान हूँ यह सोचकर
किसी औरत ने क्यों नहीं उठाई अंगुली ?
तुलसी दास पर, जिसने कहा,
"ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी,
ये सब ताड़न के अधिकारी।"[1]

स्त्री मुक्ति की कामना रुकैया सखावत हुसैन रचित "सुल्ताना का सपना" शीर्षक कहानी में स्पष्ट दिखाई देता है जहां नबाब की बेगम सुल्ताना कुलीनता की घुटन से उबकर एक ऎसी दुनिया में पहुंचती है जहां स्त्रियों का राज है। सिम्पी हर्षिता की "बंजारन हवा" और क्षमा शर्मा की "लव स्टोरी 1994" तथा जाया जादवानी की " क़यामत का दिन उर्फ़ कब्र से बाहर" की नायिकाएं खोखले आदर्श की घिसी-पिटी यातनापूर्ण जिंदगी से बाहर निकालने के लिए संघर्ष करती है।[2]

स्त्री की पीड़ा को एक स्त्री ही समझ सकती है। इस दृष्टि से मन्नू भंडारी, उषा प्रियंबदा, शिवानी, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, नाशिरा शर्मा, चित्रा मुद्गल राजी सेठ, निर्मला पुतुल, आदि की रचनाएँ काफी कुछ बयाँ करती हैं। इन रचनाओं में नारी मन की विभिन्न स्तरों पर उठने वाली भावनाओं का सटीक और वास्तविक चित्रण मिलता है। नारी शोषण के दर्द को उकेरती इनकी रचनाएँ न केवल यथार्थ का चित्रण करती हैं बल्कि उसके प्रतिकार का हर संभव प्रयास भी करती हैं।

उषा प्रियंबदा की 'जिंदगी और गुलाब', 'कितना बड़ा झूठ,' 'रुकोगी नहीं राधिका' जैसी रचनाओं में नारी की घुटन, उदासी, मुक्ति पाने की छटपटाहट आदि का सजीव चित्रण मिलता है। उसमे प्राचीन परंपराओं की दीवार को तोड़कर नवीनता का आग्रह वर्तमान है। चित्रा मुद्गल ने महानगरीय जीवन के संत्रास को बखूबी चित्रित किया है। मंजुला भगत अपनी कहानियों में समाज एवं परिवार में नारी की विडंबनापूर्ण यथार्थ को दर्शाते हुए उससे बाहर निकलने की बात कही है। उनका 'अनारो और टूटता हुआ इन्द्रधनुष' काफी चर्चित है। मृणाल पाण्डेय ने नारीवादी सोच

को आक्रामक तेवर देकर सौन्दर्य के पारंपरिक प्रतिमानों से नारी को मुक्त करने की कोशिश की है। उषा महाजन ने 'उठो अन्नपूर्णा साथ चलें' में दहेज़ उत्पीड़न, बलात्कार, यौन शोषण आदि की भर्सना करते हुए उससे बचाने की भरपूर कोशिश की है। क्षमा शर्मा ने 'स्त्री का समय' शीर्षक रचना में कहती हैं –"आखिर आदमियों को यह हक़ क्यों होना चाहिए कि वे ये बताएँ कि औरतें किस तरह का आचरण करें।" 'चुकाते नहीं सवाल' में मृदुला गर्ग ने नारीवाद की नई परिभाषा गढ़ी है। वे गहराती अप संस्कृति पर भी सवाल उठाती हैं और समाज के अंतर्विरोधों, विसंगतियों, जटिलताओं और विषमताओं पर गहरी चोट करती हैं। 'स्त्री होने की सजा', में अरविन्द जैन ने विवाह, बलात्कार, संपत्ति, तलाक, निकाह आदि में क़ानून की कमियों एवं उसके एकांगीपन को उजागर किया है। उसी तरह सरला माहेश्वरी ने 'समान नागरिक संहिता' में राजनीतिज्ञों के खोखले दावों की पोल खोलते हुए उसे अमलीजामा पहनाने की वकालत की है। निर्मला जैन अपनी कविता 'तोड़ेगी जंजीरें' में अपनी आवाज बुलंद करती हुई कहती हैं –

"तोड़ेगी जंजीरें
जंजीरों के भीतर की जंजीरें
मांगेगी आजादी
आजादी से कम कुछ भी नहीं"[3]

इस तरह भारतीय समाज में घुट-घुट कर जीती एवं जुल्मोसितम से दम तोडती नारी की अकथ कहानी को हिंदी साहित्य में काफी जीवंतता के साथ उकेरा गया है और उससे मुक्ति के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी गयी है।

सन्दर्भ सूची :-

1. महादेवी वर्मा : भारत बोल
2. औरत : उत्तरकथा खंड-1, सम्पादक राजेंद्र यादव पृष्ठ 14
3. अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, खंड-3, पृष्ठ 185

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी –डा0 रमा नवाले.
2. स्वातंत्र्योतर कथा लेखिकाएं--- डा0 उर्मिला गुप्ता.
3. भारतीय समाज में नारी --- नीरा देसाई.
4. औरत उत्तर कथा, खंड -1 एवं खंड -2.

•